Q:- "मेइजी" पुनः स्थापना पर प्रकाश डालें।

Ans:- "मेइजी" पुनःस्थापना का महत्व जापान के इतिहास में ही नहीं बल्कि विश्व के इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। जिस समय पश्चिमी राज्यों ने जपान का दरवाजा खटखटाया, उस समय जपानी समाज में कई तरह के असंतोष व्याप्त थे। जपान के अन्य सभी सामंती घरानों ने तोकुगावा शोगुन के खिलाफ हो गये थे, बड़े-बड़े सामन्तों पर अपना नियंत्रण कायम करने के लिए शोगुन ने कई तरह के इन्तजाम किये थे जिससे उन्हें अपार कष्ट पहुँचता था। "सान्किन कोताई" कानून के अनुसार सामंतों को किले बनाने, उनकी मरम्मत कराने, लड़ाकू जहाज बनाने, सिक्का ढालने और शोगुन के इजाजत के बिना शादी-विवाह करने की मनाही थी। उन्हें हर दो साल पर चार महीने के लिए शोगुन की राजधानी "येदो" में हाजिर रहना पड़ता था। जब वे "येदो" से अपनी रियासत में वापस जाते तो उन्हें अपने बीबी बच्चों को बंधक के रूप में वहीं छोड़ जाना पड़ता था। इससे हर सामन्त को राजधानी में ही अपना परिवार रखना पड़ता था जो आर्थिक रूप से भार स्वरूप था।

शोगुनों के प्रति असंतोष के कारण?

(ii) ~~राजनीतिकव्यवस्था~~ राज्य के ऊँच्चे-ऊँच्चे पदों की नियुक्ति में भी शोगुन बड़ा पक्षपात करता था। तोकुगावा परिवार के लोगों तक ही इन पदों को सीमित रखा जाता था और अन्य सामन्तों को इससे अलग रखा जाता था। शोगुन की इस भेद नीति से चोशु, सातसुमा और तोसा कुटुम्ब के सामन्त बड़े नाराज थे और उससे पीछा छुड़ाना चाहते थे। यह मनमुटाव समय के साथ साथ बढ़ता जा रहा था।

शोगुन शासन के अन्तर्गत अन्य घरानों के सामन्तों को आर्थिक दृष्टि से बड़ा दबाया गया जिससे उनकी आर्थिक स्थिति दिनोदिन खराब होती गई। उन्हें मजबूर होकर अपने खर्च में कटौती करनी पड़ी और सामुराई सैनिकों को हटाना पड़ा। इससे सामुराइयों में असंतोष पैदा हुआ और वे चोरी डकैती करने लगे जिससे समाज में ~~अव्यवस्था~~

व्यवस्था शैली। सामुराई अपनी स्थिति से एकदम असंतुष्ट थे और प्रचलित व्यवस्था अर्थात तोकुगावा शोगुन के प्रभुत्व में परिवर्तन चाहते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी में जापान के व्यापार में पर्याप्त उन्नति हुई और एक नवीन व्यापारिक वर्ग का उदय हुआ जो समाज का एक अत्यंत सम्पन्न वर्ग हो गया। सामन्तों को अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए इन व्यापारियों से कर्ज लेना पड़ा। फिर भी समाज में व्यापारियों का स्थान सामन्तों के मुकाबले अत्यन्त निम्न था। सामन्ती वर्ग का उनके प्रति हीनता का भाव व्यापारियों को काफी अखरता था इसलिए वे सामाजिक परिवर्तन के हामी हो गये।

जापान का किसान वर्ग भी अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं था। सामन्ती व्यवस्था का सारा बोझ किसानों पर ही पड़ता था। वे करों के भार और शासन की सख्ती से पिसे जा रहे थे। लेकिन धीरे-धीरे उनमें राजनीतिक जागरण आ रहा था और वे विद्रोह करने लगे थे। उनका यह विद्रोह शोगुन व्यवस्था के विरुद्ध होता था।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जापानी समाज का प्रत्येक वर्ग ~~तत्कालिन~~ तत्कालीन व्यवस्था के खिलाफ था और इसका मुख्य लक्ष्य शोगुन व्यवस्था का अन्त करना था। ऐसे ही समय में जापान में विदेशियों का प्रवेश हुआ ~~फिर~~ जिसने स्थिति को एकदम बिगाड़ दिया।

(2) सामन्तों द्वारा शोगुन का विरोध :- पश्चिमी लोगों के खतरे से निपटने के लिए जापान के अन्य सामन्तों ने शोगून-व्यवस्था का अन्त करना चाहा। उनका कहना था कि शोगून की कमजोरी और अदूरदर्शिता के कारण ही जापान की स्वतंत्रता और सम्प्रभुता खतरे में पड़ रही है। विदेशियों के प्रति शोगून शासन की नरम नीति को लेकर उन्होंने लोकमत को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया। उन्हें लगा कि इस

बहाने शोगून के चंगुल से निकला जा सकता है। किन्तु, सामन्तों के बीच आपस में मेल नहीं था। अतएव, उन्हें सम्राट को अपनी गतिविधि का केन्द्र बनाना पड़ा। उन्होंने 'बर्बरों' को निकालो, शोगून को हटाओ तथा सम्राट की शक्ति बढ़ाओ' का नारा बुलन्द किया। उसका वास्तविक उद्देश्य सम्राट की आड़ में अपनी शक्ति बढ़ाना तथा अपने ऊपर शोगून शासन द्वारा लगाई गई पाबन्दियाँ दूर करना था।

(3) विदेशी-विरोधी भावना में वृद्धि - इस बीच जापान में विदेशियों के खिलाफ भावना तीव्र होती रही। सामन्तों के प्रभाव में आकर उसने शोगून को आदेश दिया कि 25 जून 1863 तक सभी विदेशियों को देश से बाहर निकालने की व्यवस्था की जाए। किन्तु, शोगुन शासन के अधिकारी समझते थे कि यह कार्य को सरलतापूर्वक जापान से खदेड़ा जा सकता है और उन्होंने स्वयं इसका बीड़ा उठाया। चोशू कुल के सामन्तों का प्रभाव तथा शासन शिमोनोसेकी के जलडमरूमध्य के आसपास के क्षेत्रों पर था जहाँ विदेशियों के जहाज शिमोनोसेकी के जलमरूमध्य को गुजरे तो उन्हें गोलीबारी करके क्षत-विक्षत कर दिया जाए और विदेशियों को हानि पहुँचाई जाए। 25 जून, 1863 को एक अमरीकी जहाज जलडमरूमध्य से गुजरा। इस जहाज पर गोलीबारी कर इसे नष्ट कर दिया गया। जवाब में अमरीकी युद्धपोत ने भी 16 जुलाई को जापानी किलों पर वार किया और दो युद्धपोत डुबो दिए। इस कार्य में फ्रांस और हालैंड ने अमरीकियों का साथ दिया और जापानी किलों को भारी नुकसान पहुँचाया। शोगून ने स्थिति सँभालने की चेष्टा की लेकिन उग्रवादियों के समक्ष उसकी कुछ भी न चली।

14 सितम्बर, 1862 को विदेशी-विरोधी एक दूसरी घटना घट गई। उस दिन सातसूमा के सामन्त का एक जुलूस निकला। जापान में यह नियम प्रचलित था कि जब कोई

सामन्त या उसका जुलूस सड़को से गुजरता था तब लोग उसे रास्ता दे देते थे और रास्ते से हटकर सम्मान प्रकट करते थे। सातसूमा सामन्त की यात्रा के समय रिचर्डसन नामक एक अँगरेज अपने तीन घुड़सवार साथियों के साथ जा रहा था। वह जुलूस के सामने पड़ गया, लेकिन उसने सम्मान दिखलाने के लिए रास्ता नहीं छोड़ा। इसे सातसूमा सामन्त ने अपना अपमान समझा। इस पर कुद्ध सामुराई गुस्से में लाल होकर उन पर बरस और रिचर्डसन की हत्या कर दी। ब्रिटिश सरकार ने इसके लिए शोगून से एक लाख पौण्ड का हर्जाना माँगा और सातसूमा को भी हर्जाना देने को कहा। सात अँगरेजी जहाज हर्जाना वसूल करने सातसूमा की राजधानी कागोशीमा पहुँचे। उन्होंने नगर पर गोलीबारी की और एक जापानी जहाज डुबो दिया। इस घटना से जापान में विदेशियों के खिलाफ बड़ी घृणा पैदा हो गई।

(4) चोशू और शोगून में संघर्ष - चोशू और सातसूमी सामन्तों को विदेशियों के समक्ष नीचा देखना पड़ा था। अब वे अपनी कमजोरी महसूस करने लगे। उन्होंने सैनिक सुधार करने का निश्चय किया और चोशू सामुराई तथा सामान्य जनता की मिली-जुली स्थायी सेना संगठित की। यह एक महत्वपूर्ण घटना थी, क्योंकि इससे पहले सैनिक कार्य पर सामुराई सामन्तों का एकाधिकार था और सामान्य जनता को सेना के संगठन में फटकने तक नहीं दिया जाता था। अब सामन्त और सामान्य जनता एक ही स्तर पर आ गए। यह सामन्तशाही के अन्त का पूर्वसूचक सिद्ध हुआ।

विदेशियों के प्रति चोशु लोगों की उत्तेजनात्मक नीति से शोगुन को बड़ा गुस्सा आया और सैनिक कार्यवाही कर

उसने उनका (चोशुओं का) दमन करने का निश्चय किया। शोगून ने उनके विरुद्ध एक विशाल सेना भेजी और चोशू सामन्त बुरी तरह कुचल दिए गए। लेकिन, इसी समय सात्सूमा लोगों ने इसका विरोध किया। वे नहीं चाहते थे कि चोशुओं को बिलकुल खत्म कर दिया जाए। इसलिए, शोगून को अपने कड़े रुख में परिवर्तन करना पड़ा, लेकिन चोशू से उसने यह वादा करा लिया कि वह मिलेजुले नए फौजी दस्ते को भंग कर देगा। पर, अब इन फौजी दस्तों ने हथियार डालने से इनकार कर दिया। जनवरी, 1865 में उन्होंने कई दफ्तरों पर कब्जा कर लिया और 12 मार्च को रियासत की राजधानी में ले लिया। चोशू में क्रान्ति का बिगुल बज गया।

इस पर शोगून शासन ने चोशू पर पुनः हमला कर दिया। किन्तु, शोगून की कार्यवाही का समर्थन किसी दूसरे सामन्त ने न किया। शोगून पर विदेशियों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। अतः सबने शोगून का विरोध किया। युद्ध में इस बार चोशू की सेना ने शोगून को बुरी तरह पराजित कर दिया।

इस घटना के बाद चोशू और सात्सूमा एक-दूसरे के बहुत निकट आ गए। 7 मार्च, 1866 को उनके बीच एक गुप्त सन्धि हुई जिसके द्वारा शोगून शासन का अन्त करने का निश्चय किया गया।

(5) शोगून शासन का अन्त और मेईजी पुनःस्थापना - जनवरी, 1867 में तोकूगावा केईकी शोगून बना। वह प्रगतिशील विचारों का था और सबके साथ मिलजुलकर काम करना चाहता था। उसने प्रशासनिक सैनिक व्यवस्था में कई सुधार किए। शोगून को सम्भलते देखकर चोश और सात्सूमा के नेताओं ने उसे जल्दी से बलपूर्वक हटाने का निश्चय किया। फरवरी, 1867 में सम्राट कोमेई का देहान्त हो गया और उसकी जगह मूत्सुहीतो गद्दी पर बैठा। नए सम्राट की उम्र उस समय केवल पन्द्रह वर्ष की थी। अतः उस पर शोगूनविरोधी सरदारों

ने तुरन्त अपना प्रभाव कायम कर लिया। 3 जनवरी, 1868 को सातसूमा और चोशू की फौजों ने शाही महल पर अधिकार कर सम्राट की शक्ति की पुनः स्थापना की घोषणा कर दी। सम्राट ने 'मेईजी' (शानदार) उपनाम धारण कर लिया। इस घटना को 'मेईजी ईशीन' (मेईजी पुनः स्थापना) कहते हैं। इससे आगामी युग का नाम भी 'मेईजी काल' पड़ा।

तोकूगावा कोईकी एक दूरदर्शी व्यक्ति था, अतः उसने इस परिवर्तन को मान लेने का निश्चय किया और राजधानी को शान्तिपूर्वक छोड़ दिया। लेकिन, अन्य तोकूगावा सामन्त इसके राजी नहीं हुए। उन्होंने युद्ध करने का निश्चय किया। लेकिन, शाही फौज के सामने वे नहीं टिक सके और बुरी तरह पराजित हुए। शाही फौज येदो की ओर बढ़ी। केईकी ने समर्पण करने का फैसला किया और सम्राट के पास ~~आपना~~ अपना त्यागपत्र भेज दिया। कुछ तोकूगावा सामन्त अब भी इस परिवर्तन का विरोध करते रहे। लेकिन, उनकी एक न चली। उन्हें पूरी तरह कुचल दिया और सारे देश पर सम्राट का एकछत्र शासन कायम हो गया। सदियों से चला आ रहा शोगून शासन समाप्त हो गया।

(6) नया विधान – शोगून शासन के अन्त होने पर नई शासन-व्यवस्था की आवश्यकता पड़ी। अप्रैल, 1868 की ओर से एक 'विधान शपथ' तैयार किया गया जिसमें निम्नलिखित पाँच धाराएँ थीं –

(1) राज्य के मामलों पर विचार करने के लिए विस्तृत पैमाने पर सभाएँ स्थापित की जाएँगी और सब सरकारी कार्यों का निर्णय जनमत के आधार पर होगा।

(2) ऊँचे और नीचे सब वर्ग राज्य की योजना को सशक्त रूप से कार्यान्वित करने के लिए आपस में एक हो जाएँगे।

(3) जनता के सभी वर्गों को अपनी-अपनी न्यायोचित आकांक्षाओं को पूरा करने का अवसर मिलेगा जिससे कहीं कोई असन्तोष न रहे।

(4) पहले युगों की असभ्य प्रथाएँ तोड़ी जाएँगी और हर बात प्रकृति के न्यायसंगत और औचित्यपूर्ण सिद्धान्तों पर निर्भर होगी।

(5) समस्त जगत से ज्ञान प्राप्त किया जाएगा जिससे साम्राज्य के कल्याण की श्रीवृद्धि हो।

(6) अप्रैल, 1868 को सभी सामन्तों और दरबारियों ने इसका समर्थन किया और शपथ लेकर इस पर अपनी मोहरें लगाईं।

शासन चलाने के लिए सम्राट के कुछ परामर्शदाता नियुक्त किए। ये सब-के-सब नौजवान थे और नए जोश के साथ काम करने का दृढ़ थे। इन्होंने तेजी से पश्चिमी विद्या, संस्कृति और जीवन-पद्धति अपनाने का संकल्प किया। इन व्यक्तियों के निर्देशन में एक केन्द्रीय संगठन का निर्माण किया गया। इसमें सर्वोच्च प्रशासक, सर्वोच्च सभा, सहकारी सभा और सात विभागों की योजना थी। सभाओं में डैम्यो और सामुराइयों को रखा गया। राज्यसभा को तीन सदनों में बाँटा गया। सा-इन (वाम सदन), यू-इन (दक्षिणी सदन) और सेई-इन (मध्य सदन) जो क्रमशः कानून बनाने, मन्त्रालयों को चलाने और आम देखभाल का काम करते थे। किन्तु सारी सत्ता सम्राट और उच्च सामन्ती वर्ग के लोगों के हाथ थी। आगे चलकर इस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष भी चला। लेकिन, 1868 ई० में मेईजी पुनः स्थापना का कार्य सम्पन्न हो गया।

मेईजी पुनः स्थापना का महत्व :—

जापान के इतिहास में मेईजी पुनः स्थापना का विशेष महत्व है। आधुनिक जापान के निर्माण का बीजारोपण मेईजी पुनः स्थापना से ही शुरू होता है। इस काल में अनेक ऐसे कार्य हुए जिनके कारण जापान के राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में कई तरह के परिवर्तन आए। जापान से सामन्त प्रथा का

उन्मूलन हो गया। जापान में सामन्तवाद का इतिहास बहुत पुराना था। इसके फलस्वरूप जापान की उन्नति रुक गई थी। लेकिन सामन्तवाद के अन्त हो ही उन्नति का रास्ता भी खुल गया।

पुन: स्थापना ने जापान को विदेशी साम्राज्यवाद के चंगुल में फँसने से बचा लिया। पुन: स्थापना के कारण जापान में अपूर्व राष्ट्रीयता का विकास हुआ। इसके कारण जापान के लोग शुरू से ही विदेशियों के इरादे के विरुद्ध सतर्क हो गए और उन्होंने देश को पराधीनता से बचा लिया।

पुन: स्थापना के फलस्वरूप जापान में साम्राज्य-वादी भावना का विकास हुआ। जापान की आन्तरिक दशा में कई ऐसे परिवर्तन हुए, जिनसे वहा का शासन का अत्यन्त दृढ़ और कुशल हो गया। जापान का औद्योगिकरण बड़ी तेजी से हुआ और जापान के सैन्यबल में अपार वृद्धि हुई। कुछ ही दिनों में वह अत्यन्त शक्तिशाली देश बन गया। इस शक्ति के आधार पर उसने साम्राज्य-विस्तार की नीति अपनाई और देखते-देखते वह भी एक साम्राज्यवादी देश के रूप में परिवर्तित हो गया।

पुन: स्थापना के कारण जापान का शासन व्यव-स्थित हुआ। अब शासन चलाने के लिए एक संसद की स्थापना हुई और नया संविधान भी बना। नागरिकों को कई तरह के अधिकार प्रदान किए गए। जापान की सेना भी नए ढंग से संगठित की गई। इस दृष्टिकोण से भी पुन: स्थापना को बहुत अधिक महत्व दिया जा सकता है।

पुन: स्थापना ने जापान की प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर दिया। विदेशियों से सम्पर्क कायम हुआ और जापानियों ने पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति का अनुशीलन कर विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति करना आरम्भ किया।

जापान के पश्चिमी देशों के बराबर बनना था, इस लिए जापान में बड़ी तेजी के साथ कल-कारखानों का विकास हुआ, नए-नए वैज्ञानिक हथियार बने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था हुई तथा पाश्चात्य ढंग पर नई सेना का संगठन हुआ और पुनः स्थापना ने राष्ट्र के रूप में उसे एक नया जन्म दिया।